दिनॉक 25 मई 2018 समय प्रातः 11 बजे से स्थान अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान, आर0बी0आई0 लेन, गोमतीनगर लखनऊ ।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक, सम्मान समारोह एवं राजनैतिक चिन्तन ।

के अवसर पर

राष्ट्रीय अध्यक्ष मा० श्री सुबोधकान्त सहाय जी के द्वारा दिया गया उद्‌बोधन –

आज राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक एवं राजनैतिक चिन्तन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर आप सभी के गौरव से स्वयं को गौरान्वित अनुभव कर रहा हूॅ । कल दिनॉक 24 मई को बैठक में लिये गये निर्णयों और हुई परिचर्चा पर मुझे अगाध प्रसन्नता है। महासभा में जुड़े हुये और समर्पित भाव से काम कर रहे हमारे सभी पदाधिकारी साथी प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हैं और सर्वसम्मति से निर्णय लेते हैं । जिनके स्थाई और दूरगामी परिणाम होंगे । साथियों ने एक अच्छी वेवसाईट बनाई है जिसके माध्यम से महासभा की गतिविधियों को जन–जन तक फैलाने का काम आसानी से होगा। महासभा में टीम भावना से काम हो रहा है जो सराहनिय है ।

कायस्थ समाज की 130 वर्ष पुरानी यह संस्था ही वह मूल संस्था है जो सम्पूर्ण कायस्थ समाज का प्रतिनिधित्व करती है तथा वैधानिक रूप से भी सर्वमान्य संस्था यही है । वर्ष 1998 में विगत चुनाव बनारस में हुआ था । जिसमें मुझे ही मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का सौभाग्य मिला था, और मेरे द्वारा ही उस समय के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये गये थे । विगत 20 वर्षों में महासभा को जिस दायित्व और गति के साथ कार्य करना चाहिये था वो नहीं हुआ । बल्कि समाज में अन्य बहुत से छोटे छोटे संगठनों ने स्वरूप ले लिया। लम्बी शिथिलता के बाद पुनः इसके स्वरूप को बदलने का कार्य हमारी वर्तमान टीम द्वारा किया जा रहा है । 24 फरवरी 2018 को आगरा में हुये चुनाव में आप सभी के द्वारा मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद का दायित्व दिया गया है । अब मेरा दायित्व है कि मैं सम्पूर्ण समाज को और समाज में संचालित विभिन्न नामधारी संगठनों को इस महासभा के साथ एकजुट रख एवं सशक्त स्वरूप प्रदान कर सकूं । जो कदम एकजुटता की ओर बढ़ चुका है और वह अब अनवरत आगे बढ़ता रहेगा।

सबसे पहले हमें एक निश्चित कार्ययोजना बनाकर सभी प्रान्तों में कायस्थ महासभा को संगठनात्मक रूप को चुस्त, दुरूस्त करना होगा। महासभा की

संभागीय/मंडलीय तथा जिला इकाईयों का गठन करना होगा और संगठन संचालन कैसे हो, संगठनकर्ताओं के कार्य एवं दायित्व क्या हों ? संगठन का वार्षिक कैलेण्डर क्या हो और उन्हें कैसे क्रियान्वित किया जाये इन सभी विषयों पर एक विस्तृत जानकारी देनी होगी। राष्ट्रीय स्तर से संचालित ऑफिशियल बेवसाईट WWW.abkmindia.in जो आज ही लॉच की गई है पर विस्तृत विवरण उपलब्ध कराया जायेगा । महासभा में चरणबद्ध और समयबद्ध होकर सदस्यता अभियान चलाया जायेगा । ऑनलाइन सदस्यता भी प्रारम्भ की गई है । सम्पूर्ण समाज का डाटाबेस तैयार करने हेतु प्रत्येक शहर के संगठन को प्रेरित करने का प्रयास करना होंगा । हमारा पहला कार्य महासभा की मजबूती, सशक्तीकरण और गतिशीलता लाना होगा ।

यह सही है कि महासभा को कायस्थ समाज का प्रतिनिधि संगठन होने के नाते और सबसे पुराना संगठन होने के नाते जिस गति से और जिस स्तर से कार्य करना चाहिये था वो नहीं हो पाया। yfdu ;g dgu e dgh dkb ldkp ugh g fd lekt ,d lxBu d uhp ,dtV ugh gvk lkj lekt e tkx:drk vkb g, देश के विभिन्न प्रान्तों एवं शहरों में कायस्थ समाज विभिन्न नामों के संगठनों के तहत कार्य कर रहा हैं । उनके कार्य करने का अपना तरीका है वे अपने स्तर से कार्यक्रम और गतिविधियां संचालित कर रहे हैं और उनके कार्य करने का अपना– अपना एक भौगोलिक क्षेत्र भी है यह भी सही है कि उनके कार्यक्षेत्र भले ही छोटे छोटे हों लेकिन इन संगठनों द्वारा जो कार्य किया जा रहा है वह नजरंदाज नहीं किया जा सकता ।

अतः हम कह सकते हैं कि समाज बड़ी संख्या में एकजुट हुआ है और आवश्यकता पड़ने पर एक साथ दिखाई भी पड़ता है, हम इस अभियान को और बड़े स्तर पर गति प्रदान करना चाहते हैं, हम हमारे इन संगठनों को एक व्यापक स्वरूप देना चाहते हैं जिसमें किसी भी प्रकार से उनकी पहंचान उनके कार्यक्रम, उनके उद्देश्य, उनके लक्ष्य, उनके संसाधन और उनके अस्तित्व पर कोई भी प्रभाव पड़े बगैर हम उन्हें और अधिक सशक्त बनाने की इच्छा रखते हैं।

निसन्देह अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, कायस्थ समाज का सबसे पुराना और राष्ट्रीय स्वरूप वाला संगठन है जिसकी भारत के ज्यादा से ज्यादा प्रान्तों में

इकाईया हैं जो मंडल और जिला स्तर तक सक्रिय हैं । चूँकि महासभा का स्वरूप राष्ट्रीय है और राष्ट्रीय स्तर पर उसकी गतिविधियां और उसकी उपस्थित है। समाज के विभिन्न नामधारी संगठन स्थानीय सामाजिक मुद्दों और विषयों पर अपने– अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर उनकी आवाज और मुद्दें सशक्त रूप से कायस्थ महासभा ही उठाने में सक्षम होसकती है , सत्ता और व्यक्ति का ध्यानाकार्षण कराने के लिये आवश्यक है कि हम एक साथ मिलकर कार्य करें, इस प्रकार हमारे समाज की शक्ति कई गुना बढ़ सकती है और हमारे प्रभाव को बजूद प्राप्त हो सकेगा ।

अतः इस हेतु यह आवश्यक है कि कायस्थ समाज के सभी संगठन अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के साथ संबद्धित हो जाएं ताकि महासभा सभी संगठनों के माध्यम से आने वाली समाज की आवाज का राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करे । जहॉ ये विभिन्न नामधारी संगठन महासभा से सम्बद्धता प्राप्त कर एक शक्तिशाली व्यवस्था के साथ जुड़ सकेंगे, महासभा एक vEclyk lxBu के रूप में अपने सभी संबद्ध सदस्य संगठनों को संबल एवं सहयोग प्रदान कर पायेगा । ;g Li"V dj nuk vko';d g fd fdlh Hkh lxBu dh Hkkxkfyd] lkekftd] vkfFkd o Hkkfrd igpku o lk/ku vkfn mud ;Fkkor jgx mu ij fdlh Hkh idkj dk dkb iHkko ugh iMxk A bld fy; 'kh?k gh ,d foLrr dk;l;k tuk o ik:Ik fodflr dj oclkbV ij viykM djfn;k tk;xkA

तीसरा हमारा विषय है कि कायस्थ समाज को वापस उसका राजनैतिक गौरव कैसे प्राप्त हो, इस पर एक ठोस कार्य योजना विकसित करनी होगी । इतिहास पर अगर नजर दौड़ाये तो हम देखते हैं कि स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात् कायस्थ समाज एक अग्रणी समाज हुआ करता था । शिक्षा के क्षेत्र में, विज्ञान के क्षेत्र में, समाजिक चिन्तन के क्षेत्र के साथ ही अन्य क्षेत्रों में हमारी प्रमुख भूमिका थी, राजनैतिक क्षेत्र में अपनी एक पहंचान थी और अग्रणी भूमिका हुआ करती थी । स्वामी विवेकानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री जयप्रकाश नारायण, डा0 सच्चिदानन्द सिन्हा, श्री कृष्णबल्लभ सहाय एवं श्री महामाया बाबू राजनैतिक क्षितिज पर संसद – लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभा व विधान परिषदों में कायस्थ समाज का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हुआ करता था, लेकिन वर्तमान समय में कायस्थ समाज हाशिये पर चला गया है। उसका एक बहुत बड़ा कारण कि कायस्थ समाज जिन अन्य समाजों की अगुआई या

पैरवी करता था जिन समाजों के साथ उसका जुड़ाव था वह धीरे धीरे जातीय राजनीति हावी होने के कारण खिसकता गया । जब तक देश एवं राज्यों में मुद्दों की राजनीति थी कायस्थ अग्रणी थे उसमें लीडर थे। हाल के वर्षो में पोलराइजेशन की पॉलिटिक्स में मुद्दे गौण हो गये और गोलबंदी की राजनीति हावी हो गई ।

बिहार में के.बी.सहाय, महामाया बाबू, पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु, राजस्थान में शिवचरण माथुर एवं अन्य राज्यों में अनगिनत नेता थे अपनी एक हुंकार से बहुत बड़ी सत्ता शक्ति को हिला देने वाले लोकनायक जयप्रकाश नारायण शिखर पर थे । उस समय एक ही समानता थी कि वे सभी उपेक्षित समाजों से जुड़े थे, वो गरीब, मजदूर और मजबूर लोगों की आवाज बने जिनके मुद्दों और विषयों को कभी प्राथिमिकता नहीं मिली । परिणीति वे समाजिक परिवर्तन के अगुवा रहे एक शक्ति के रूप में उभरे और राजसत्ता के शिखर तक पहुँचे । हमारा समाज राजनीति के प्रति उदासीनता के दौर से गुजर रहा है। हमें इन्हें उस उदासीनता से बाहर निकालना होगा। हमें राजनैतिक क्षितिज पर अपना वजूद बनाना होगा। हमें फिर बापस उन्हीं समाजों और उनके मुद्दों को अपनाना होगा उनकी आवाज बनना होगा और उन्हें अपने साथ जोड़ना होगा । "KADAM" इसी अवधारणा को मूर्त रूप देने का एक सोच–एक मंच बनेगा।

"KADAM" में (कायस्थ, आदिवासी, दलित(अति दलित), अतिपिछड़ा, और अल्पसंख्यक) इन जातियों को जोड़कर हमें एक समाजिक समीकरण बनाना होगा, इनके समाजों से जुड़े मुद्दे, इनकी समस्याओं और इनकी आवाज के साथ मिलकर पहले सामाजिक और फिर राजनैतिक तौर पर एकजुटता के लिये प्रयास करना होगा। हमारा ये उद्घोष होगा Lkekftd vkj jktufrd vf/kdkj d fy, ge dne&dne ij lkFk jgx o dne&dne lkFk pyxA

कदम अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के द्वारा प्रवर्तित तो होगा लेकिन अखिल भारतीय कायस्थ महासभा से अलग vfLrRo okyk ep gkxk । यहॉ यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि कहीं कोई यह भ्रम की स्थिति ना पाले कि अखिल भारतीय कायस्थ महासभा में किन्हीं दूसरी जातियों का प्रवेश दिया जारहा है या सम्मलित किया जाना है । अखिल भारतीय कायस्थ महासभा विशुद्ध रूप से भगवान श्री चित्रगुप्त जी के वंशजों – कायस्थ समाज का अपना सर्व प्रतिष्ठित, सर्वमान्य और सर्वस्वीकार्य संगठन था, है और रहेगा इसकी मौलिकता, विशिष्टता और विशुद्धता से कोई भी छेड़–छाड़ नहीं की जासकती ।

dne के लिये अलग से पूरी एक कार्य योजना, उद्देश्य, लक्ष्य, रणनीति, विजन एवं मिशन डॉक्यूमेन्ट तैयार किया जायेगा । इसके लिये शीघ्र ही राष्ट्रीय स्तर पर एक ड्राफ्टिंग एवं कॉर्डिनेशन मीटिंग आयोजित की जायेगी ।

इसी अवसर पर मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे समाज को सरकारी नौकरियों के पीछे भागने की अपेक्षा अब व्यवसाय को प्राथमिकता देनी होगी। जब एक व्यक्ति नौकरी करता है तो ज्यादा से ज्यादा एक परिवार का पालन पोषण कर पाता है । लेकिन जब हमारे समाज का व्यक्ति व्यापार के साथ जुड़ जायेगा तो वह अपने साथ अन्य कई परिवारों का भरण पोषण करने में सक्षम हो जायेगा । अतः हमारे समाज के नौजवान युवक युवतियों को अपनी शिक्षा और प्रतिभा का उपयोग अपने स्वयं के व्यवसाय सृजन में करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । व्यापार से ही समृद्धि प्राप्त हो सकती है। इतिहास गवाह है, हमारी क्षमता से ही दूसरे राज करते रहे है।

आज इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों से पधारे हुये हमारे सभी राष्ट्रीय, प्रान्तीय – राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्यों, महिला प्रकोष्ठ युवा प्रकोष्ठ विधि प्रकोष्ठ और अन्य अन्य प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों का और कल और आज की बैठक की व्यवस्था में लगे हमारे सभी सदस्यो व पदाधिकारियों का बहुत–बहुत धन्यवाद और आभार।